एम.ए. (अंतिम) हिन्दी में पांच प्रश्नपत्र होंगे। प्रश्नपत्र प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अनिवार्य है। चतुर्थ प्रश्नपत्र एवं पंचम प्रश्नपत्र के चयन के लिए दो–दो विकल्प है। साहित्यिक वर्ग एवं व्यावसायिक वर्ग में से एक–एक प्रश्नपत्र का चयन करना अनिवार्य है। अध्ययन मण्डल (हिन्दी) की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार सत्र 2017–18 से एम.ए. (अंतिम) हिन्दी के किसी भी प्रश्नपत्र में प्रायोगिक कार्य नहीं होंगे एवं सैद्धांतिक परीक्षा में प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक के होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उर्त्तीणांक 36 प्रतिशत होगा।

प्रश्नपत्र–प्रथम
(अनिवार्य)
काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रस्तावना–

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जांचने परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्य विषय –

क) संस्कृत काव्यशास्त्र – काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन काव्य के प्रकार।

– रस सिद्धान्त – रस का स्वरुप, रस निष्पति, रस के अंग, साधारणी करण, सहृदय की अवधारणा।

– अलंकार सिद्धान्त – मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

– रीति सिद्धान्त – रीति की अवधारणा, काव्य गुण रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

– वक्रोक्ति सिद्धान्त – वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

– ध्वनि सिद्धांत – ध्वनि का स्वरुप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग, चित्रकाव्य

– औचितय सिद्धान्त – प्रमुख स्थानाएं, औचित्य भेद।

ख) पाश्चात्य काव्य शास्त्र –

– प्लेटो – काव्य सिद्धान्त

– अरस्तू – अनुकरण–सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन

– लोंजाइनस – उदात्त की अवधारणा

– टी. एस. इलियट – परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वेयक्तिकता का सिद्धान्त,वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

– आई. ए. रिचर्ईस – रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

– सिद्धान्त और वाद – अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद,
– मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

– आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ – संरचनावाद, शैली विज्ञान, विखंडनवाद उत्तर आधुनिकतावाद।

ग) हिन्दी कवि–आचार्यो का काव्यशास्त्रीय चिंतन
– लक्षण–काव्य–परम्परा एवं कवि–शिक्षा

घ) हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ–
– शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।

ड) व्यावहारिक समीक्षा –प्रश्न पत्र में पूछे गये किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

प्रश्नपत्र–द्वितीय
(अनिवार्य)
प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रस्तावना–

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक और व्यवहारिक चेतना है, जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं –सौंदर्य परक और प्रयोजन परक। भाषा के प्रयोजन परक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन व्यवहार से है। और है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजन मूलक हिन्दी का अध्ययन अति अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

पाठ्य विषय –

खण्ड (क)

कामकाजी हिन्दी –

– हिन्दी के विभिन्न रूप	–	सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा मातृभाषा
– कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य	–	प्रारूपण, पत्र–लेखन, संक्षेपण,
	–	पल्लवन, टिप्पणी
– पारिभाषिक शब्दावली	–	स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

– ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली

हिन्दी कम्प्यूटिंग –

– कम्प्यूटर – परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब पब्लिकेशन का परिचय।
– इंटरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव, एवं इंटरनेट समय **मितव्ययिता के सूत्र।**
– लिंक, ब्राउलिंग, ईमेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउन लोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी साफ्टवेयर, पैकेज।

खण्ड (ख)

पत्रकारिता –

– पत्रकारिता : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार
– हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास
– समाचार लेखनकला
– समाचार लेखनकला
– संपादन के आधारभूत तत्व
– व्यवहारिकता प्रूफ शोधन
– शीर्षक की संरचना, लीड, इन्ट्रो एवं शीर्षक संपादन
– सम्पादकीय लेखन
– पृष्ठ सज्जा
– साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता, एवं प्रेस प्रबंधन
– प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

खण्ड (ग)

मीडिया लेखन –

– जनसंचार	–	प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ
– विभिन्न जनसंचार **माध्यमों का स्वरूप**	–	मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रृव्य, इंटरनेट

– श्रव्य माध्यम (रेडियो)	–	मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार लेखन एंव वाचन/रेडियोनाटक/उद्घोषणा लेखन।
– दृश्य–श्रव्य माध्यम	–	(फिल्म, टेलीवीजन एवं विडियो) दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामाग्री का सामंजस्य। पार्श्व वाचन (वायस ओवर) पटकथा लेखन। टेलीन्ड्रामा/डॉक्यूड्रामा, संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।
– इंटरनेट	–	सामग्री सृजन (Content Creation)

खण्ड (घ)

अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार

– अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि
– हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका
– कार्यालयीन हिन्दी और अनुवाद
– जनसंचार माध्यमों का अनुवाद
– विज्ञापन में अनुवाद
– वैचारिकता साहित्य का अनुवाद
– वाणिज्यिक–अनुवाद
– वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद
– विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद
– व्यावहारिक–अनुवाद–अभ्यास
– कार्यालयी अनुवाद – कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक–प्रयुक्तियाँ, पदनाम विभाग आदि।
– पत्रों के अनुवाद
– पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद
– बैंक–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
– विधि साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
– साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक
– सारानुवाद
– दुभाषिया प्रविधि
– अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन

प्रश्नपत्र–तृतीय
(अनिवार्य)
भारतीय साहित्य

प्रस्तावना –

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हिन्दी साहित्य के अध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान–क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टि का विकास होगा यही नहीं इससे हिन्दी अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा। इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

पाठ्य विषय –

प्रथम खण्ड –

1. भारतीय साहित्य का स्वरूप
2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्यायें
3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
4. भारतीयता का समाज शास्त्र
5. हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

द्वितीय खण्ड –

इसके अंतर्गत हिन्दीतर भाषा साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है, जिसमें पूर्वाचल भाषा वर्ग के बंगला अथवा उड़िया साहित्य का सामान्य अध्ययन किया जायेगा एवं पूर्वांचल भाषा वर्ग (उड़िया, बंगला, असमिया, मणिपुरी) के साहित्य इतिहास की सामान्य जानकारी भी अपेक्षित है।

तृतीय खण्ड –

तृतीय खण्ड के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है जिसमें अंग्रेजी या संस्कृत के साथ हिन्दी को जोड़कर अध्ययन करना होगा। सामान्यतया यह अध्ययन साहित्य के इतिहास से ही संबंधित रहेगा।

चतुर्थ खण्ड –

इसके अंतर्गत 1 उपन्यास, 1 कविता संग्रह तथा 1 नाटक का अध्ययन अपेक्षित है, जिन पर केवल आलोचनात्मक प्रश्न ही पूछा जायेगा।

उपन्यास	–	मृत्युंजय (असमिया) विरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
कविता संग्रह	–	वर्षा की सुबह (उड़िया–सीताकांत महापात्र)
नाटक	–	हयवदन (कन्नड़, गिरीश कर्नाड)

प्रश्नपत्र–चतुर्थ
(वैकल्पिक)
साहित्यक वर्ग–(क) लोक साहित्य

प्रस्तावनाः–

हिन्दी जगत में विद्यमान विभाषाओं में अमूल्य लोक साहित्य सम्पदा उपलब्ध है। इसके संकलन, संपादन, सवेक्षण तथा प्रकाशन द्वारा ही अपनी मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है और हिन्दी का जनाधार बढ़ाया जा सकता है। अस्तु इसके अध्ययन की उपयोगिता निर्विवाद है।

पाठ्य विषय–

इस प्रश्न – पत्र मे सैद्धिान्तिक अध्ययन के साथ संबंधित क्षेत्र के लोक साहित्य का गहन अध्ययन अपेक्षित है तथा इससे संबंधित प्रायोगिक कार्य भी।

खण्ड (क) –

– लोक और लोकवार्ता और लोक–विज्ञान
– लोक संस्कृति – अवधारण, लोकवार्ता और लोक संस्कृति, लोक – संस्कृति, और साहित्य
– लोक साहित्य – अवधारण, संस्कृत वाडयम में लोकोन्मुखता।
– हिन्दी के आरंभिक साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक साहित्य का अंतःसंबंध, लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध।
– भारत मे लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास
– हिन्दी लोक साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक साहित्य का अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्यायें।
– लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण–
लोकगीत, लोकनाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नृत्य–नाटय, लोक–संगीत लोकगीत–संस्कार–गीत, व्रत–गीत, श्रम–गीत, ऋतुगीत, जाति–गीत, लोक नाट्य, रामलीला, रास लीला, कीर्तनिया स्वांग, यक्षगान, भवाई, संपेड़ा, विदेयिा, माच, भांड, तमाशा, नौटंकी,जात्रा, कथकली–हिन्दी लोक नाट्य की परम्मपरा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोकनाटयों का प्रभाव
– लोक कथा – व्रत कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा, कथानक रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय – लोक–गाथा–ढोला–मारू, गोपीचंद, भरभरी, लोरिकायन, नल–दमयंती, लैला–मजनूँ, हीर–राझां, सोहनी–महिवाल, लोरिक–चंदा, बगडावत, आल्हा–हरदील।
– लोक–नृत्य नाट्य
– लोक–संगीत – लोकवाद्य तथा विशिष्ट धुनें।
– लोक भाषा– लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ

खण्ड (ख)

– छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन – लोकगीत, लोकनाट्य, लोक कथा, लोक गाथा, लोकोक्ति, लोक सुभाषित, मुहावरे पहेलियाँ इत्यादि।

अंक विभाजन

4	आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक खण्ड से एक–एक)	4X15	= 60 अंक
4	लघुत्तरीय प्रश्न	5X4	= 20 अंक
20	वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न	20X1	= 20 अंक

सहायक पुस्तकेंः–

1. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र
2. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन – डॉ. शकुन्तला शर्मा
3. छत्तीसगढ़ी का उद्विकास – डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा
4. छत्तीसगढ़ी हल्बी और भतरी बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ. भालवंद राव तैलंग

5. लोक मानस, भारतीय लोक का विवेचन – विद्या विंदु सिंह मधु प्रकाशन इलाहबाद
6. लोक साहित्य स्वरूप एवं सर्वेक्षण – डॉ. सत्येन्द्र अभिनंदन ग्रंथ स्वर्णलता अग्रवाल
7. लोक साहित्य पहचान – रामनारायण उपाध्याय कालिदास प्रकाशन उज्जैन
8. छत्तीसगढ़ी लोक कथाएँ – वीरेन्द्र कुमार यदु भाषिका प्रकाशन रायपुर
9. हिन्दी लोक साहित्य – गणेशदत्त सारस्वत विद्या विहार कानपुर
10. लोक साहित्य परिषद् – सुरेश चंद्र त्यागी, मेरठ वि.वि. हिन्दी
11. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य एवं लोक जीवन का अध्ययन – डॉ. शकुंतला वर्मा

प्रश्नपत्र–चतुर्थ
(वैकल्पिक)
साहित्यक वर्ग–(ख) छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य

प्रस्तावनाः–

हिन्दी साहित्य मात्र खड़ी बोली तक सीमित नहीं है। उसकी अनेक विभाषाओं में आज भी पर्याप्त साहित्य सृजन किया जा रहा है। प्राचीन साहित्य तो मुख्यतः विभाषाओं में भी प्राप्य है। इनका पृथक अध्ययन कराने से इन विभाषाओं का उत्तरोत्तर विकास होगा।

पाठ्य विषय–

– छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास, मानकरण, भौगोलिक सीमा, शब्द कोश

– छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास, युग प्रवृतियाँ

– छत्तीसगढ़ी कविता एवं कवि (व्याख्या एवं विवेचना) निर्धारित कवि–
पं. सुन्दरलाल शर्मा पं. शुकलाल प्रसाद पाण्डेय, प्यारेलाल गुप्त, पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र, हरिठाकुर, कपिलनाथ कश्यप

– द्रुत पठन हेतु छत्तीसगढ़ी गद्य एवं पद्य विद्या के निर्धारित साहित्य कार–गोपाल मिश्र डॉ. नरेन्द्र देव शर्मा, कुंज बिहारी चौबे, डॉ. विनय पाठक, नंद किशोर तिवारी, श्यामलाल चतुर्वेदी, लक्ष्मण मस्तुरिहा, पवन दीवान, डॉ. मैथ्यू जहानी जर्जर, नारायाण लाल परमार, नरसिहं दास, वैष्णावं पं. मेदिनी प्रसाद पाण्डेय

– छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य का उद्‌भव विकास विद्या – उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, कहानी।

अंक विभाजन

3	व्याख्यायें (प्रत्येक खण्ड से एक–एक)	3X10	= 30 अंक
4	लघुत्तरीय प्रश्न	4X5	= 20 अंक
2	आलोचनात्मक प्रश्न	2X15	= 30 अंक
20	वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न	1X20	= 20 अंक

सहायक पुस्तकें–

1. छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य – डॉ. सत्यभामा आड़िल
2. छत्तीसगढ़ी का उद्‌विकास – डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा
3. छत्तीसगढ़ी हल्बी, भतरी भाषाओ का वैज्ञानिक अध्ययन – भाल चंद्र राव तैलंग
4. छत्तीसगढ़ परिचय – डॉ. बल्देव मिश्र
5. छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन – नंद किशोर तिवारी
6. चल तो चली गाँव मा एवं बड़की भौजी – बद्रीसिंह कटैरिया
7. पत्रिका लोकाक्षर सहकारी विप्र मुद्रणालय बिलासपुर

प्रश्नपत्र–पंचम
(वैकल्पिक)
व्यावसायिक वर्ग–(क) पत्रकारिता प्रशिक्षण

प्रस्तवनाः–

पत्रकारिता आज जीवन समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते विश्व में स्नायु तंतुओं के समान काम कर रही। दैनिक समाचार से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मिडिया, इलेक्ट्रानिक मिडिया, इंटरनेट आदि में इसका वास्तविक रूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साहित्यिकता के साथ–साथ रोजगार परकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

पाठ्य विषय–

- पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार
- विश्व पत्रकारिता का उदय। भारत में पत्रकारिता का आरंभ
- हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास
- समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व – समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम।
- संपादन कला के सामान्य सिद्धान्त – शीर्षकीकरण, पृष्ट–विन्यास, आमुख और समाचार पत्र के प्रस्तुति प्रक्रिया।
- समाचार पत्रों के विभिन्न स्तम्भों की योजना।
- दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्रैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
- समाचार के विभिन्न स्त्रोत
- संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य पद्धति
- पत्रकारिता से संबंधित लेखन – संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी– समाचार, अनुवर्तन (फालोआप) आदि की प्रविधि।
- इलेक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता– रेडियों टी.वी. वीडियों केबल, मल्टीमीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
- प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रण कला, प्रूफ शोधन, ले आउट पृष्ट सजा।
- पत्रकारिता का प्रबंधन – प्रशासनिक व्यवस्था, ब्रिकी, तथा वितरण वयवस्था।
- भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक, अधिकार, सूचनाधिकार एवं मावनधिकार।
- मुक्त प्रेस की अवधारण।
- लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन।
- प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्यिगिकी।
- प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।
- प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

अंक विभाजन

4	आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक खण्ड से एक–एक)	4X15	= 60 अंक
5	लघुत्तरीय प्रश्न	5X4	= 20 अंक
20	वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न	20X1	= 20 अंक

सहायक पुस्तकें–

1. हिन्दी पत्रकारिता – डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली
2. भाषायी पत्रकारिता और जनसंचार – डॉ. विष्णु पंकज, विवेक पब्लिशिंग हाउस जयपुर
3. हिन्दी पत्रकारिता में आठवां दशक – मारियोका आफ्रेकेदी, प्रासंगिक प्रकाशन नई दिल्ली
4. पत्रकारिता के मूल सिद्धांत – श्रीपाल शर्मा विभूति प्रकाशन नई दिल्ली
5. साहित्य पत्रकारिता – रमासिंह राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर

6. समाचार पत्र मुद्रण और साजसज्जा – श्याम सुंदर शर्मा, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी
7. संवाद और संवाददाता – राजेन्द्र चंडीगढ़, हरियाण साहित्य अकादमी
8. आधुनिक पत्रकारिता – अर्जुन तिवारी वाराणसी वि.वि. प्रकाशन
9. पत्रकारिता के प्रारंभिक सिद्धांत – बलजीत सिंह मतीर काया पब्लिकेशन बहादुरगढ़
10. पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएं – भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली

प्रश्नपत्र–पंचम
(वैकल्पिक)
व्यावसायिक वर्ग–(ख) अनुवाद विज्ञान

प्रस्तावना–

सिमटते हुए विश्व में विविध देशी एवं विदेशी भाषाओं के ज्ञान भंडार की जानकारी के लिए अनुवाद की अनिवार्यता असंदिग्ध है। तुलनात्मक साहित्य, भाषा विज्ञान तथा विदेशी भाषा शिक्षण आदिमें भी अनुवाद एक कारगर उपकरण के रू॰ में प्राचीन काल में से एक मान्य विधा के रूप में स्वीकृत रहा है। जन संचार माध्यमों तथा दूसरे आधुनिक विषय क्षेत्रों में भी इसकी उपयोगिता सर्वविदित है। अतः अनुवाद का शिक्षण, पठन–पाठन आज की अनिवार्यता है।

पाठ्य विषय–

- अनुवाद – परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएं।
- अनुवाद का स्वरूप – अनुवाद कला–विज्ञान अथवा शिल्प
- अनुवाद का इकाई – शब्द पदबंध, वाक्य पाठ
- अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि – विश्लेषण, अंतरण पुनर्गठन
- अनुवाद प्रक्रिया के विविध चरण, स्त्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया। अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ – संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद प्रक्रिया की प्रवृति।
- अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त
- अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार – कार्यलयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिकी, मानविकी, संचार माध्यम, विज्ञापन आदि।
- अनुवाद की समस्याएँ – सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, विधि साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएँ, मीड़िया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।
- अनुवाद के उपकरण – कोश, पारिभाषिक, शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
- अनुवाद – पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।
- मशीनी अनुवाद –
- अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसासिक परिद्दश्य
- अनुवाद के गुण
- पाठ की अवधारण और प्रकृति

  पाठ– शब्द प्रति शब्द
  शाब्दिक अनुवार
  भावानुवाद
  छायानुवाद
  पूर्ण और अंशिक अनुवाद
  आशु अनुवाद
- व्यावहारिक अनुवार (प्रश्न पत्र मे दिये गये अंग्रेजी अवतरण की हिन्दी अनुवाद)

अंक विभाजन

4	आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक खण्ड से एक–एक)	4X15	= 60 अंक
5	लघुत्तरीय प्रश्न	5X4	= 20 अंक
20	वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न	20X1	= 20 अंक

सहायक पुस्तकें–

1. अनुवादः प्रक्रिया एवं समस्याएं – डॉ. रामनारायण पटेल, लोकाक्षर प्रकाशन बिलासपुर
2. अनुवादकला – डॉ. एन.ई. विश्वनाथा अय्यर प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली
3. अनुवाद विज्ञान नगर (वेस्ट) दिल्ली – डॉ. भोलानाथ तिवारी शब्दकार 159 गुरू अंगद
4. अनुवाद कला–सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया
5. अनुवाद प्रक्रिया ईस्ट – डॉ. रीतारानी पालीवाल साहित्य निधि, सी/ 38 कष्ण नगर दिल्ली 51
6. हिन्दी में व्यवहारिक अनुवाद दिल्ली – डॉ. आलोक कुमार रस्तागी जीवन ज्योति प्रकाशन